लो हवन में श्वास गहरा।
सुखमय जीवन हो सुनहरा।।

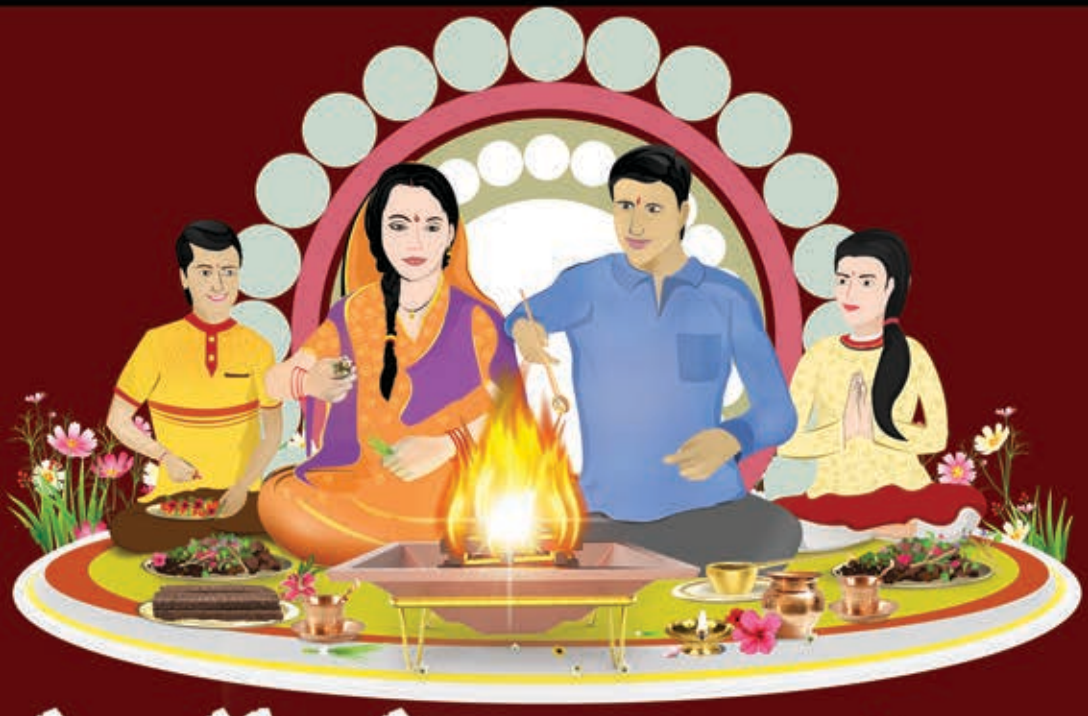

यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म

(शत.ब्रा. 1.7.1.5)

यज्ञ/हवन करना सबसे श्रेष्ठ कर्म है।

होतृषदनं हरितं हिरण्ययम् –अथर्व.–7.99.1

यज्ञकर्ता का घर सभी प्रकार के ऐश्वर्यों से भर जाता है।